International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 136-137

उच्च शिक्षा में सम्मिलित छात्रों के सामाजिक विकास नेतृत्व क्षमता एवं लोकतांत्रिक विकास में राष्ट्रीय सेवा योजना की उपादेयता

बालेश्वर नाथ पाण्डेय

अतिथि प्रवक्ता, सी0एम0पी0 डिग्री कालेज, इलाहाबाद, भारत।

सारांश

वर्तमान भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व पटल पर तेजी से उभरती अर्थव्यवस्था के रूप में अपनी पहचान बना रही है। वैश्वीकरण एवं औद्योगीकरण के साथ ही भारत की एकता एवं अखण्डता के सुदृढ़ीकरण हेतु सामाजिक संतुलन एवं समरसता का वातावरण स्थापित करना हमारी शैक्षिक व्यवस्था का प्रमुख उद्देश्य है। जहाँ एक तरफ औद्योगीकरण एवं वैश्वीकरण के कारण प्रशिक्षित एवं कुशल भारतीय मानव संसाधन की आवश्यकता बढ़ी है वहीं दूसरी तरफ मानव संसाधनों को औद्योगिक वातावरण में समायोजन स्थापित करने में तनाव एवं मानसिक विक्षोभ का सामना भी करना पड़ रहा है। व्यवसायिक अनुशासन से समायोजन में भारतीय पेशेवर को मजबूत एवं सक्षम बनाने के उद्देश्य से उच्च शिक्षा स्तर पर ही छात्रों को सामाजिकता, नेतृत्व क्षमता एवं लोकतांत्रिक मूल्यों हेतु तैयार करने के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना को एक माध्यम के रूप में अपनाया गया है। राष्ट्रीय सेवा योजना छात्रों के सर्वांगीण विकास एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व निर्माण में सफल सिद्ध हुई है।

मूल शब्द: उच्च शिक्षा, सामाजिक विकास नेतृत्व क्षमता, लोकतांत्रिक विकास, राष्ट्रीय सेवा योजना

प्रस्तावना

प्राचीन भारतीय समाज में सामुदायिक सेवा के प्रति रूचि रही है। वर्तमान भारतीय समाज में आधुनिकता एवं वैश्वीकरण के कारण स्वार्थ एवं स्वहितगामी विचारधारा का प्रभाव देखने को मिल रहा है। जहाँ भावनात्मक संवेदना को व्यर्थ की वस्तु के रूप में परिभाषित करने का प्रयास किया जा रहा है। ऐसे मोड़ पर राष्ट्रीय सेवा योजना एक आशा के स्रोत के रूप में प्रस्तुत हुई है। उच्च शिक्षा में सम्मिलित छात्रों के मस्तिष्क एवं हृदय में राष्ट्र निर्माण, नेतृत्व कौशल एवं लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति आस्था के जाग्रत करने में राष्ट्रीय सेवा योजना महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

सन् 1950 में केन्द्रीय सलाहकार बोर्ड आफ एजूकेशन (ControlA dvisory Board of Education CABE) की सिफारिश पर राष्ट्रीय सेवा योजना (National Service Scheme, (NS) को प्रथम पंचवर्षीय योजना में सम्मिलित किया गया। इसके अन्तर्गत छात्र स्वेच्छा से कुछ समय श्रमदान एवं सामुदायिक कार्य हेतु उपयोग में लायें। जिससे छात्र सामुदायिक व्यवस्था एवं प्रबन्धन के स्वरूप को समझ सकें और सामुदायिक विकास हेतु अपने पुरूषार्थ का सदुपयोग कर सकें। सन् 1958 में शिक्षा मंत्रालय के द्वारा स्नातक कक्षाओं में सामुदायिक सेवा को स्नातक शिक्षा पर पाठ्येत्तर गतिविधियों के रूप में सम्मिलित किये जाने हेतु प्रयास शुरू किया गया। सन् 1959 में शिक्षा मंत्रियों के एक सम्मेलन में सामुदायिक सेवा हेतु ड्राफ्ट प्रस्तुत किया गया। सम्मेलन की सिफारिशों के लिए डॉ0 सी0डी0 देशमुख की अध्यक्षता में 28 अगस्त 1959 को एक कमेटी का गठन किया गया जो सामुदायिक सेवा हेतु ग्राह्य दिशा–निर्देश का निर्माण करें। कमेटी ने 4 माह से एक वर्ष का समय राष्ट्रीय सेवा हेतु अनिवार्य किया जाय जो छात्र हाईस्कूल पास कर कालेज शिक्षा में दाखिला लेना चाहते हैं। आर्थिक कारणों से एवं प्रबन्धन की कठिनाइयों के कारण कमेटी के सुझाव को लागू नहीं किया गया परन्तु पूरे देश में सामुदायिक सेवा के नवीन दृष्टिकोंण पर बहस की शुरूआत हुई। सन् 1960 ई0 में भारत सरकार[1] ने के0जी0 सैमदेव को विभिन्न देशों की राष्ट्रीय सेवा की योजना के अध्ययन हेतु भेजा गया।

सन् 1964–66 में डॉ0डी0एस0 कोठारी कमीशन ने विद्यार्थी के सभी स्तरों हेतु सामाजिक सेवा को अनिवार्यतः सम्मिलित किये जाने की सिफारिश की। 1967 में शिक्षा मंत्रियों की कान्फ्रेंस में इस पर विचार किया गया और यह सिफारिश की गयी कि विश्वविद्यालय स्तर पर छात्रों को एन0सी0सी0 कैडेट बनाने हेतु प्रशिक्षण दिया जाए एवं इसका विकल्प राष्ट्रीय सेवा योजना में सम्मिलित होना हो अर्थात् एन0सी0सी0 (NCC) या एन0एस0एस0 (NSS) के द्वारा किसी ने किसी प्रकार छात्र को सामुदायिक सेवा से जोड़ना सुनिश्चित किया गया।

सन् 1967 में उपकुलपतियों के सम्मेलन में इस NCC/NSS हेतु 5 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया। 24 सितम्बर 1969 को शिक्षा मंत्री डॉ0 बी0के0आर0बी0राव ने NSS कार्यक्रम को सब राज्यों के विश्वविद्यालयों में एक साथ प्रारम्भ किया और राज्य सरकारों को सहयोग हेतु प्रोत्साहित किया[2]।

NSS के उद्देश्य

1. समुदाय को सामुदायिक कार्य से समझना।
2. समुदाय के साथ सम्बन्ध स्थापित करना।
3. समुदाय की आवश्यकता एवं समस्याएं समझना एवं समस्याओं के निदान हेतु उपाय खोजना।
4. समुदाय को सामाजिक एवं नागरिक दायित्वों के प्रति जागरूक करना।
5. स्वयं एवं समुदाय की समस्याओं का व्यवहारिक उपाय खोजना।
6. समूह में समायोजन एवं दायित्वों में भागीदारी सुनिश्चित करना।
7. गतिशील सामुदायिक कार्यों में प्रतिभाग करना।
8. नेतृत्व क्षमता एवं लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रस्फुटन।
9. आपात एवं प्राकृतिक आपदा हेतु तैयार करना।
10. राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के लिए प्रोत्साहित करना।

NSS आदर्श वाक्य

NOT ME BUT YOU अर्थात् स्वयं के लिए नहीं आपके लिए आदर्श वाक्य से स्पष्ट है कि स्वार्थ से ऊपर होकर परमार्थ हेतु जीवन की तैयारी।

NSS का प्रतीक चिन्ह

NSS का प्रतीक चिनह उड़ीसा के कोर्णाक सूर्य मन्दिर से रथ का पहिया लिया गया है जिसमें आठ दण्ड लगे हैं[3] जो आठ पहर अर्थात् चौबीस घण्टे कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। छात्रों के सामाजिक विकास नेतृत्व क्षमता एवं लोकतांत्रिक विकास हेतु एन0एस0एस0 द्वारा किये जाने वाले प्रयास निम्नलिखित है –

1. **मलिन बस्तियों में स्वच्छता अभियान एवं स्वास्थ्य जागरूकता अभियान** : एन0एस0एस0 के माध्यम से मलिन बस्तियों में साफ– सफाई एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी जागरूकता अभियान चलाया जाता है जिसमें राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवक बिना किसी शर्म एवं संकोच के साथ समूह में सफाई और जागरूकता अभियान में अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करते हैं। स्वयं सेवकों में सामुदायिक जिम्मेदारी एवं समानता के भाव का प्रस्फुटन होता है जिसके कारण शैक्षिक जीवन के साथ ही स्वयंसेवक सामाजिक दायित्वों के कर्तव्य बोध से अवगत होता है।

2. **शिक्षा के प्रसार हेतु जनजागरूकता** : समुदाय में शिक्षा के महत्व को रेखांकित करते हुए राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से स्वयं सेवक समूह में घूम–घूमकर समाज के पिछड़े एवं गरीब तबकों में शिक्षा प्रसार एवं शिक्षा हेतु सरकारी सहायता एंव अनुदान की सूचनाओं का प्रचार–प्रसार करके शिक्षा से वंचित लोगों को शिक्षा हेतु उत्साहित करने का प्रयास करते हैं।

3. **शिविर में सामूहिक जिम्मेदारियों का लोकतांत्रिक तरीके से विभाजन एवं अनुपालन** : शिविर में स्वयंसेवकों में सामूहिक जिम्मेदारियों का लोकतांत्रिक तरीके से विभाजन किया जाता है[4]। स्वयंसेवक की योग्यता के अनुसार जिम्मेदारियां दी जाती हैं। स्वयं सेवक बिना किसी भेदभाव के लोकतांत्रिक तरीके से शिविर के द्वारा स्वयं सेवकों हेतु दी गयी जिम्मेदारी का अनुपालन सुनिश्चित करना है। शिविर में भोजन बनाने से लेकर साफ–सफाई सुरक्षा और सांस्कृतिक तथा शैक्षिक गतिविधियों में स्वयं सेवक प्रत्येक क्षण पूर्ण मनोयोग के साथ अपने कृत्यों के प्रति समर्पित रहते हैं। इस प्रकार स्वयं सेवकों में प्रजातांत्रिक मूल्य, समूह नेतृत्व क्षमता एवं सामाजिक एकता जैसे आदर्श व्यक्तित्व गुणों का विकास राष्ट्रीय सेवा योजना की साथर्कता को परिलक्षित एवं फलीभूत करता है।

4. **स्वयंसेवकों में शारीरिक श्रम के प्रति रूचि उत्पन्न करना** : स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता है। अरस्तू के इन वाक्यों का सही अनुपालन राष्ट्रीय सेवा योजना के शिविरों में देखने को मिलता है। राष्ट्रीय सेवा योजना के शिविर प्रायः शान्त वातावरण में शहर के कोलाहल से दूर प्रकृति के सुरम्य वातावरण में स्थापित किये जाते हैं। स्वयं सेवकों द्वारा शिविर का स्थल स्वयं निर्माण किया जाता है। स्वयं सेवक शिविर स्थल की साफ–सफाई एवं निर्माण में तत्पर दिखाई देते हैं। शिविर निर्माण के पश्चात स्वयंसेवक शिविर संचालन एवं सामुदायिक अभियानों हेतु शारीरिक श्रम के साथ ही स्वयं के अन्दर नवीन ऊर्जा की अनुभूति करते हैं। शिविर के सफल आयोजन हेतु छात्र शारीरिक श्रम हेतु तत्पर होते हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से नये वातावरण एवं प्रकृति की मनोरम गोद में स्वयंसेवकों के मन में प्रकृति प्रेम एवं प्रकृति संरक्षण के भावों का प्रस्फुटन देखने को मिलता है। राष्ट्रीय सेवा योजना सही अर्थो में नित नवीन सामुदायिक गतिविधियों एवं नेतृत्व कुशलता के साथ ही लोकतांत्रिक मूल्यों का उद्गम स्थल है।

5. **सांस्कृतिक एवं विशेषज्ञ व्याख्यानों के माध्यम से सामाजिकता, नेतृत्व क्षमता एवं लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास** : राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर में सांस्कृतिक गतिविधियों, सामुदायिक क्रियाकलापों एवं समय–समय पर विषय–विशेषज्ञों के माध्यम से स्वयं सेवकों में सामाजिक एकता, विश्वबन्धुत्व की भावना, सामाजिक कुरीतियों जैसे– दहेज प्रथा, बाल विवाह, नशाखोरी, पर्दा प्रथा के प्रति जागरूकता एवं इनके 'उन्मूलन' हेतु सुझाव आदि क्रियाकलाप स्वयं सेवकों के लिए योग्य एवं जागरूक नागरिक निर्माण हेतु उर्बरा एवं जल का कार्य करती है जो स्वयं सेवक के व्यक्तित्व को निर्भीक, प्रभावशाली एवं जागरूक व्यक्तित्व के रूप में प्रतिष्ठित करती है।

6. **सरकारी जनकल्याण की योजनाओं का प्रचार–प्रसार करना** : राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर में समय–समय पर विशेषज्ञों के माध्यम से संस्कार द्वारा जनकल्याण की योजनाओं के बारे में विस्तृत व्याख्यान माला का आयोजन किया जाता है[5]। शिविर में उपस्थित स्वयंसेवक इन सूचनाओं का लाभ अपने व्यवसायिक एवं सामाजिक जीवन में उठाते हैं। स्वयंसेवकों के माध्यम से रैली निकालकर इन जनकल्याणकारी योजनाओं जैसे भारत निर्मल अभियान, डिजिटल इण्डिया, मेक इन इण्डिया, स्टार्ट अप इण्डिया, स्वच्छ भारत, निर्मल भारत, प्रधानमंत्री शहरी आवास योजना, नमामि गंगे, शौचालय एवं पेयजल योजना आदि योजनाओं का प्रचार–प्रसार किया जाता है जिससे स्वयंसेवक स्वयं तो लाभान्वित होते ही हैं और समाज के अन्य लोगों को भी इनके बारे में जागरूक करते हैं।

राष्ट्रीय सेवा योजना हमारे मनीषियों एवं दार्शनिकों की आदर्श संकल्पना का एक व्यवहारात्मक दृष्टिकोंण है जिसे उच्च शिक्षा संस्थाओं के माध्यम से छात्रों के अन्दर वैचारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, लोकतांत्रिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों के साथ ही मजबूत निर्णय क्षमता, नेतृत्व कौशल एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व के सृजन का हमारा स्वप्न साकार हो रहा है। आदर्श भारत के आदर्श नागरिकता, अंधकार के साथ ही सफल व्यवसायी निर्माण हेतु राष्ट्रीय सेवा योजना का योगदान सराहनीय है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाण्डेय, रामशकल और चतुर्वेदी, ममता, उदीयमान, भारतीय समाज में शिक्षक, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा (2004)।
2. एन0आर0 स्वरूप, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, आर0लाल बुक डिपो (2010)।
3- www.nss.nic.in
4- ww.digitalindia.gov.in
5- https://india.gov.in